नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

एससी आरक्षण : सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक निर्णय

सुप्रीम कोर्ट का हाल ही में दिया गया निर्णय भारतीय संवैधानिक व्यवस्था की स्पष्टता और दृढ़ता का सशक्त उदाहरण है. धर्मांतरण और अनुसूचित जाति (एससी) दर्जे को लेकर लंबे समय से चल रही बहस के बीच अदालत ने न केवल कानून की मंशा को स्पष्ट किया, बल्कि सामाजिक न्याय की मूल अवधारणा को भी सुदृढ़ किया है. संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 के क्लॉज 3 की व्याख्या करते हुए न्यायालय ने यह साफ कर दिया कि अनुसूचित जाति का दर्जा केवल हिंदू, सिख और बौद्ध धर्म के अनुयायियों तक ही सीमित है. यह निर्णय इस सिद्धांत को मजबूती देता है कि आरक्षण और विशेष संवैधानिक संरक्षण किसी सामान्य सामाजिक सुविधा के रूप में नहीं, बल्कि विशिष्ट ऐतिहासिक अन्याय के परिप्रेक्ष्य में दिए गए अधिकार हैं.

सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी कि धर्म परिवर्तन के साथ ही एससी का दर्जा 'तत्काल और पूर्ण रूप से' समाप्त हो जाता है, प्रशासनिक और कानूनी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है. इससे न केवल कानून की अस्पष्टताओं का अंत होता है, बल्कि आरक्षण प्रणाली की पारदर्शिता और विश्वसनीयता भी सुनिश्चित होती है. यह फैसला उन संभावित दुरुपयोगों पर भी अंकुश लगाता है, जहां धर्म बदलने के बावजूद आरक्षण का लाभ लेने की कोशिश की जाती रही है.'चिनथडा आनंद बनाम आंध्र प्रदेश राज्य' मामले में अदालत ने जिस स्पष्टता के साथ यह कहा कि केवल प्रमाण पत्र होने से अधिकार नहीं मिल सकता, वह शासन व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश है. यह निर्णय बताता है कि संवैधानिक लाभ केवल कागजी औपचारिकताओं से नहीं, बल्कि वास्तविक पात्रता से जुड़े होते हैं.

इस फैसले का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट ने अपने संवैधानिक दायरे का पूरी तरह पालन किया है. अदालत ने नीतिगत निर्णय लेने के बजाय मौजूदा कानून की व्याख्या की है, जिससे शक्तियों के पृथक्करण (सेप्रेशन आफ पावर) का सिद्धांत और मजबूत होता है. यह एक स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है, जहां न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका अपने-अपने दायित्वों का संतुलित निर्वहन करती हैं. हालांकि यह विषय सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से संवेदनशील बना रहेगा. जाहिर है इसीलिए दलित ईसाइयों और मुस्लिमों को एससी दर्जा देने की मांग पर बहस जारी है और इसके लिए सरकार ने आयोग का गठन भी किया है. बहरहाल,जब तक कानून में कोई परिवर्तन नहीं होता, तब तक सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करेगा.

दरअसल, यह फैसला केवल एक कानूनी निर्णय नहीं, बल्कि संवैधानिक मूल्यों की पुनः पुष्टि है. इसने यह संदेश दिया है कि सामाजिक न्याय की व्यवस्था को स्पष्ट नियमों और सिद्धांतों के आधार पर ही संचालित किया जा सकता है. सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर यह साबित किया है कि वह संविधान का सच्चा संरक्षक है और उसके निर्णय देश की न्याय व्यवस्था को दिशा देने में मील का पत्थर साबित होते हैं. सुप्रीम कोर्ट का यह कहना सही है कि दलितों द्वारा धर्म परिवर्तन के बाद सामाजिक स्थिति में बदलाव आता है, क्योंकि ईसाइयत या इस्लाम में जातिवाद और वर्ग भेद नहीं है. जाहिर है इस फैसले से धर्मांतरण के बाद होने वाले विवाद और तनाव भी समाप्त होंगे और वास्तविक दलितों के साथ अन्याय नहीं होगा.

ग्वालियर चंबल डायरी

रास चुनाव : नरोत्तम का नाम आगे बढ़ते ही कांग्रेस को सताया क्रॉस वोटिंग का खतरा

हरीश दुबे

19 जून को मप्र में खाली हो रही राज्यसभा की तीन सीटों में से एक सीट कांग्रेस के कब्जे वाली भी है लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह दोबारा राज्यसभा में जाने के प्रति अनिच्छा जता चुके हैं, लिहाजा इस तीसरी सीट पर टिकट पाने के लिए कांग्रेस और भाजपा, दोनों ही दलों में सरगर्मी है. खास बात यह है कि कांग्रेस से ज्यादा भाजपा में हलचल है, वह भी ग्वालियर चंबल क्षेत्र की सत्ता वीथिकाओं में. भाजपा शिविर में इस यकीन के साथ तीसरी सीट जीतने के लिए जोड़तोड़ शुरू हो गई है कि यदि कांग्रेस के छह विधायक भी क्रॉस वोटिंग कर दें तो भाजपा तीसरी सीट पर भी आसानी से फतह कर लेगी.

इस कवायद के चलते सत्ता दल में ग्वालियर चंबल से तीन बड़ी दावेदारियां उभर कर आईं, डॉ. नरोत्तम मिश्रा, लालसिंह आर्य और जयभान सिंह पवैया. फिलहाल सर्वाधिक सक्रिय नरोत्तम मिश्रा ही नजर आ रहे हैं, वजह यह कि पवैया के मप्र वित्त आयोग का अध्यक्ष बनने के बाद उनकी दावेदारी करीब करीब खत्म सी है जबकि लालसिंह आर्य भाजपा अजा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की बड़ी जिम्मेदारी पहले से ही संभाल रहे हैं, आर्य के मामले में एक पेंच यह भी है कि इसी चुनाव में खाली हो रही राज्यसभा की एक सीट पर मौजूदा सांसद और प्रदेश के आदिवासी चेहरे डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी को रिपीट किए जाने के आसार हैं, इस तरह सोलंकी की नुमाइंदगी से दलित आदिवासी कोटा पूरा हो जाएगा. इस गणित ने नरोत्तम मिश्रा की दावेदारी कुछ मजबूत की है. एक वजह यह भी है कि तीसरी सीट का विजय पथ भाजपा के लिए आसान नहीं है, इस सीट को जीतने के लिए वह पूरी तरह कांग्रेस विधायकों के निष्ठा परिवर्तन पर निर्भर रहेगी. चूंकि पिछले विधानसभा चुनाव में नरोत्तम ने कांग्रेस के जनाधार वाले नेताओं को भाजपा में लाने वाली टोली की कमान संभाली थी, लिहाजा वह कांग्रेस के तमाम विधायकों और उनके छिपे क्षत्रपों के संपर्क में पहले से हैं. भाजपा के एक तबके में माना जा रहा है कि यदि असमंजश भरी तीसरी सीट पर नरोत्तम को चुनाव मैदान में उतारा तो वे हारी हुई बाजी को पलट सकते हैं. नरोत्तम सियासी जोड़तोड़ वाले अपने हुनर को कमलनाथ सरकार गिराने के लिए बेंगलुरु में चलाए गए ऑपरेशन लोटस में दिखा ही चुके हैं. नरोत्तम का नाम आगे बढ़ते ही उन्हीं की पार्टी के वे शुभचिंतक भी सक्रिय हो गए हैं जिन्होंने पिछले राज्यसभा चुनाव और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष पद के लिए उनका नाम चलते अपने घोड़े खोल दिए थे. जाहिर है उन्हें ज्यादा खतरा अपनों के सितम से है.

मोस्ट वांटेड के लिए सुरक्षित पनाहगाह बना ग्वालियर चंबल

डबरा एवं शिवपुरी के पुराने लोगों को अच्छी तरह याद है कि पंजाब में आतंकवाद के दौर में इस इलाके को अपने लिए महफूज मानकर कई अंतरराज्यीय वांटेड यहां शरण लेते रहे थे, दिल्ली के बहुचर्चित नीतिश कटारा हत्याकांड के आरोपी विकास यादव को भी डबरा से ही पकड़ा गया था. लंबी फेहरिस्त है, अब इस कड़ी में रेप, धोखाधड़ी धमकी के आरोपी पंजाब के आप पार्टी के विधायक हरमीत का नाम भी जुड़ गया है जिन्हें ग्वालियर बायपास से पंजाब पुलिस ने हिरासत में लिया.

स्टेशन पर एक राय नहीं बनी तो सुझाया तानसेन का नाम

ग्वालियर रेल्वे स्टेशन का नामकरण अटलजी या कैलाशवासी सिंधिया के नाम पर हो अथवा राजा मानसिंह तोमर के नाम पर, इस पर कोई सर्वसम्मत राय बनती न देख राजनीति से वास्ता न रखने वाले ग्वालियर के संस्कृतिकर्मियों एवं संगीत रसिकों ने एक नया नाम आगे बढ़ाया है वह है सुर सम्राट तानसेन का. इस नाम पर जोर देने वालों की दलील है कि दुनिया भर में ग्वालियर की पहचान संगीत और तानसेन की वजह से है, लिहाजा ग्वालियर स्टेशन उन्हीं के नाम पर होना चाहिए. दरअसल, ग्वालियर में भाजपा दो खेमों, मूल और महल में बंटी हुई है. मूल भाजपा ने अटलजी तो महल भाजपा ने माधव महाराज का नाम आगे बढ़ाया है. दोनों तरफ से रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव तक अर्जियां भेजी गई हैं.

संचय, साधना, उपासना का काल है नवरात्रि

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू, शिमला

नवरात्र शब्द से नव अहोरात्रों (विशेष रात्रियां) का बोध होता है. इस समय शक्ति के नव रूपों की उपासना की जाती है क्योंकि रात्रि शब्द सिद्धि का प्रतीक माना जाता है. भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने रात्रि को दिन की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है. इन नवरात्रों में लोग अपनी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति संचय करने के लिए अनेक प्रकार के व्रत, संयम, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग-साधना आदि करते हैं. यहां तक कि कुछ साधक इन रात्रियों में पूरी रात पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर आंतरिक त्राटक या बीज मंत्रों के जाप द्वारा विशेष सिद्धियां प्राप्त करने का प्रयास करते हैं.

नवरात्रों में शक्ति के 51 पीठों पर भक्तों का समुदाय बड़े उत्साह से शक्ति की उपासना के लिए एकत्रित होता है और जो उपासक इन शक्ति पीठों पर नहीं पहुंच पाते वे अपने निवास स्थल पर ही शक्ति का आह्वान करते हैं. मनीषियों ने रात्रि के महत्व को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में समझने और समझाने का प्रयत्न किया. अब तो यह एक सर्वमान्य वैज्ञानिक तथ्य भी है कि रात्रि में प्रकृति के बहुत सारे अवरोध खत्म हो जाते हैं. हमारे ऋषि-मुनि आज से कितने ही हजारों-लाखों वर्ष पूर्व ही प्रकृति के इन वैज्ञानिक रहस्यों को जान चुके थे. आप अगर ध्यान दें तो पाएंगे कि अगर दिन में आवाज दी जाए, तो वह दूर तक नहीं जाती है, किंतु यदि रात्रि में आवाज दी जाए तो वह बहुत दूर तक जाती है.

इसके पीछे दिन के कोलाहल के अलावा एक वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि दिन में सूर्य की किरणें आवाज की तरंगों और रेडियो तरंगों को आगे बढ़ने से रोक देती हैं इसका वैज्ञानिक सिद्धांत यह है कि सूर्य की किरणें दिन के समय रेडियो तरंगों को जिस प्रकार रोकती हैं ठीक उसी प्रकार मंत्र जाप की विचार तरंगों में भी दिन के समय रुकावट पड़ती है. इसीलिए ऋषि-मुनियों ने रात्रि का महत्व दिन की अपेक्षा बहुत अधिक बताया है.

मंदिरों में घंटे और शंख की आवाज के कंपन से दूर-दूर तक वातावरण कीटाणुओं से रहित हो जाता है. यही रात्रि का तर्कसंगत रहस्य है. जो इस वैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखते हुए रात्रियों में संकल्प और उच्च अवधारणा के साथ अपनी शक्तिशाली विचार तरंगों को वायुमंडल में भेजते हैं, उनकी कार्यसिद्धि अर्थात मनोकामना सिद्धि, उनके शुभ संकल्प के अनुसार उचित समय और ठीक विधि के अनुसार करने पर अवश्य होती है.

वैज्ञानिक आधार नवरात्र के पीछे का वैज्ञानिक आधार यह है कि पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा काल में एक साल की चार संधियां हैं जिनमें से मार्च व सितंबर माह में पड़ने वाली गोल संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं. इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है. ऋतु संधियों में अक्सर शारीरिक बीमारियां बढ़ती हैं.

अत:उस समय स्वस्थ रहने के लिए तथा शरीर को शुद्ध रखने के लिए और तन-मन को निर्मल और पूर्णत:स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया का नाम नवरात्रहै. रूपक के द्वारा हमारे शरीर को नौ मुख्य द्वारों वाला कहा गया है और, इसके भीतर निवास करने वाली जीवनी शक्ति का नाम ही दुर्गा देवी है. इन मुख्य इन्द्रियों में अनुशासन, स्वच्छ्ता, तारतम्य स्थापित करने के प्रतीक रूप में, शरीर तंत्र को पूरे साल के लिए सुचारू रूप से क्रियाशील रखने के लिए नौ द्वारों की शुद्धि का पर्व नौ दिन मनाया जाता है.

संकट के दौर में जनता कितना धैर्य रखे

अमेरिका, इजराइल व ईरान के युद्ध को लेकर भारत की भूमिका क्या है, इस प्रश्न का उत्तर प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में अपने भाषण में दिया. उन्होंने कोविड संकट के समय दिखाई गई एकता का उल्लेख करते हुए धैर्यपूर्वक राष्ट्रीय एकता बनाए रखने पर बल दिया. ऊर्जा संकट, वित्तीय बाजार में भारी अस्थिरता तथा विदेश में रहने वाले 1 करोड़ भारतीयों की सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए प्रधानमंत्री ने किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहने को कहा. इस युद्ध की वजह से सारे देश में उद्योगों व जनजीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ा है. होटल, रेस्टोरेंट ही नहीं, मोरबी के सेरामिक टाइल निर्यातकों पर भी ऊर्जा संकट से बुरा असर पड़ा है. खाड़ी देशों से बड़े पैमाने पर उर्वरक, गंधक व अमोनिया की आवक प्रभावित हुई है. प्रधानमंत्री ने दावा किया कि उनकी सरकार संवेदनशील, सतर्क व सदैव तत्पर है. युद्धरत और युद्ध से प्रभावित देशों के साथ भारत के व्यापक व्यापारिक रिश्ते हैं. उन्होंने आश्वस्त किया कि भारत ने कच्चे तेल के भंडारण को प्राथमिकता दी. देश में 53 लाख मीट्रिक टन से अधिक का स्ट्रेटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व है तथा 65 लाख मीट्रिक टन से अधिक के रिजर्व की व्यवस्था पर देश काम कर रहा है. भारत अलग-अलग देशों के सप्लायर के साथ लगातार संपर्क में है. सरकार का प्रयास रहा है कि पेट्रोल, डीजल व गैस की सप्लाई बहुत ज्यादा प्रभावित न हो. भारत ने 2024-25 में 41.4 प्रतिशत एलएनजी कतर से आयात की थी. प्रधानमंत्री के संबोधन की आलोचना करते हुए कांग्रेस के जयराम रमेश ने इसे आत्मप्रशंसा से भरा भाषण बताया और कहा कि ईरान पर अमेरिकी-इजराइली हवाई हमलों की निंदा में प्रधानमंत्री मोदी ने एक शब्द तक नहीं कहा. पीएम ने कोरोना काल का उल्लेख किया लेकिन तब लाखों प्रवासियों के अपने घरों तक पैदल जाने, ऑक्सीजन के अभाव में हजारों लोगों की मौत तथा लाखों लोगों के बेरोजगार होने की व्यथा को राष्ट्र भूल नहीं सकता. सरकार के पूर्व आर्थिक सलाहकार की रिपोर्ट है कि मोदी के कार्यकाल में देश की आर्थिक वृद्धि को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया लेकिन प्रधानमंत्री इस रिपोर्ट को नजरअंदाज करने की कोशिश कर रहे हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पाप का घड़ा फूटते देर नहीं अब खरात की खैर नहीं

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, आजकल खरे-खोटे की पहचान कर पाना बहुत मुश्किल हो गया है. कहते हैं कि खोटा सिक्का असली सिक्के को चलन या सर्कुलेशन से बाहर कर देता है. लोग खरा सिक्का अपनी जेब में रख लेते हैं और खोटा सिक्का तुरंत चला देते हैं.'

हमने कहा, 'खरे और खोटे सरनेम भी होते हैं. डॉ. नारायण भास्कर खरे मध्यप्रांत और बेरार के मुख्यमंत्री थे. उनकी सरकार गिरने पर पं. रविशंकर शुक्ला मुख्यमंत्री बने थे. उस समय नागपुर सीपी एंड बेरार की राजधानी थी. दुर्गा खोटे अपने जमाने की मशहूर अभिनेत्री थीं.'

पड़ोसी ने कहा, 'खरे-खोटे की बात भूल जाइए. इस समय चर्चा में तांत्रिक अशोक खरात है जो खुद को कैप्टन कहलाना पसंद करता है. वह पूछताछ करने वाले पुलिसकर्मियों को शाप देने की धमकी देता है. इस व्यभिचारी लंपट के चक्कर में अनेक नेता और अधिकारी आ गए थे. खरात के नाम से हमें गाना याद आ गया- कहें कबीर सुनो भाई साधो बात कहूं मैं खरी, ये दुनिया एक नंबरी

तो मैं दस नंबरी! खरी बात यह है कि लगभग 100 महिलाओं का शोषण करने वाले इस चरित्रहीन खरात के साथ अनेक बड़े नेताओं की तस्वीरें मौजूद हैं जो उसके पैर पूजते थे और अपने स्वार्थ के लिए उसके भक्त बन गए थे. उसने करोड़ों की संपत्ति जुटाई थी. महाराष्ट्र महिला आयोग की अध्यक्ष चाकणकर भी उसके चक्कर में आ गई थीं. वह खरात के एक ट्रस्ट में थीं.'

हमने कहा, 'ट्रस्ट का मतलब सिर्फ न्यास नहीं भरोसा या विश्वास भी होता है. खरात की करतूतों का भंडाफोड़ होने से उसके अंधभक्तों का विश्वास टूट गया. उसकी एक और ठगी सामने आई है. वह सिन्नर तहसील के मीरगांव स्थित ईशान्येश्वर मंदिर में कर्मकांड करते हुए अपने भक्तों में पहले प्लास्टिक का नकली सांप छोड़कर भय का संचार करता था और फिर बाधा दूर करने के नाम पर अपने ट्रस्ट के लिए लाखों रुपये वसूल करता था. वह 100 रुपये किलो की दर से जंगली इमली के बीज मंगाता था. इन बीजों को पॉलिश करवाने के बाद दिव्य मणि बताकर 10 हजार से 1 लाख रुपये में भक्तों को दिया करता था. वह खुद को ऑस्ट्रेलिया की मर्चेंट नेवी का कैप्टन तथा अंकशास्त्री या न्यूमरोलॉजिस्ट बताता था. भ्रष्ट नेताओं की काली कमाई को वह व्हाइट मनी में बदलने का काम भी करता था. चुनाव में खैरात बांटने वाले चतुर-चालाक नेता खरात के यार बने बैठे थे. खरात ने मुंह खोला तो उनकी भी खैर नहीं!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12209

-डॉ. सागर खादीवाला

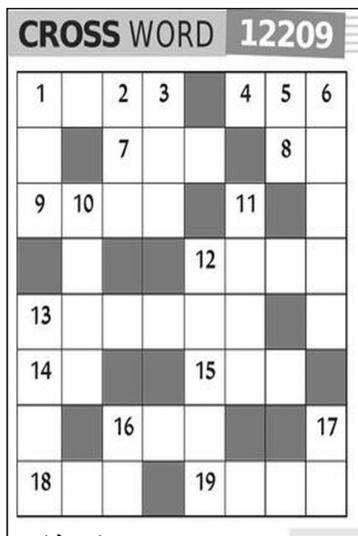

ऊपर से नीचे

1. अस्थिर होना, जमी अवस्था से इधर-उधर होना, डोलना 2. एक पक्षी, सुर्खाब 3. हिलोर, तरंग 5. मुनाफा, प्राप्ति 6. देश निकाले का दंड पाया हुआ, निर्वासित 10. गहरा होना या करना 11. स्वामी, पति, मालिक 12. वचन देकर उसे न निभाना 13. कुश्ती में विपक्षी को गिराना या चित करना, प्रतियोगियों को हराना 16. सेवक, दास, जन (उर्दू)

बाएं से दाएं

1. हिमालय पर्वत (सं.) 4. चिकित्सा, उपाय, युक्ति (उर्दू) 7. बोलना, वर्णन करना 8. जो स्वभाव से अच्छा हो, अच्छा 9. अप्रिय, असह्य (उर्दू) 12. दंगा-फसाद, भीषण या विकट दुर्घटना 13. सलाहकार, परामर्श या सलाह देने वाला 14. आच्छादित करना 15. बादलों का हटना 16. हवादार कोठी, बंगाल का, बंगाल की भाषा 18. बिहार राज्य के अंतर्गत एक प्राचीन स्थान जो बड़ा विश्वविद्यालय था 19. हाथी को चलाने वाला महावत

Solution 12208

ब	ह	नो	ई	■	सं	ग	म
या	र	■	र्ष्या	■	ग	ज	क
■	■	क	लु	षि	त	■	बू
मृ	ग	या	■	■	रा	व	ल
त्यु	■	म	ति	■	श	शी	■
■	उ	त	र	ना	■	क	र्म
क	ड़ा	■	प	र	मा	र	■
थ	का	व	ट	■	चा	ण	क्य

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में उतावलीपन में लिये गये निर्णय से हानि होगी, शत्रुपक्ष के षडयंत्रों के कारण मन व्यथित रहेगा, पूर्व नियोजित कार्यों में व्यस्तता रहेगी, वर्ष के मध्य में मित्रों व भाईयों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, संतान पक्ष से नवीन योजनाओं का विचार विमर्श होगा, वर्ष के अन्त में सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी,जमीन जायजाद से लाभ मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु षडयंत्रों के कारण मन व्यथित रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की पूर्व निर्धारित कार्यों में व्यस्तता रहेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतान पक्ष से नवीन समाचार प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में सुधार होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सांसारिक सुखों की वृद्धि होगी,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का खर्च अधिक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं का लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, विवेकी होगा. न्यायप्रिय रहेगा. अस्थिर स्वाभाव का रहने के कारण कल्पनाओं में सुखद अनुभूति करने वाला होगा. जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यापार से लाभ कमायेगा. माता पिता का विशेष भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

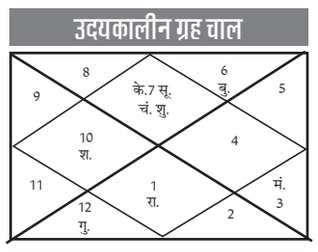

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2083 चैत्र शुक्ल अष्टमीं गुरूवासरे दिन 2/10, आर्द्रा नक्षत्रे शाम 6/34, शोभन योगे रात 2/40, वव करणे सू.उ. 5/56, सू.अ. 6/4, चन्द्रचार मिथुन, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल अष्टमीं को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, मोट, सरसों, अलसी, अरंडी, बिनौला, तेल, कपूर, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. भाग्यांक 1441 है.

मेष- राजकीय कार्यों में सफ्लता मिलेगी. आय के साधनों में वृद्धि होगी. सम्मान प्राप्ति का योग है. मानसिक शांति बनी रहेगी. आशा से अधिक उपलब्धि रहेगी.

वृषभ- पारिवारिक वातावरण सुखद एवं प्रसन्नतादायक रहेगा. मान सम्मान में वृद्धि होगी. यश एवं कीर्ति प्राप्त होगी. शारीरिक पीड़ा संभाव्य है.

मिथुन- कृषि कार्यों में खर्च की योजना बनेगी. लाभ के अवसर प्राप्त होंगे. योजनाओं का क्रियान्यन होगा. प्रसन्नता बनी रहेगी. श्रम अधिक होगा.

कर्क- राजकीय कार्यों में सफ्लता मिलेगी. साझेदारी के कार्यों में सावधानी रखें. मांगलिक कार्यों पर विचार विमर्श होगा. संयम रखें.

सिंह- सामाजिक कार्य में रूचि रहेगी. परिश्रम के कार्यों में उचित परिणाम प्राप्त होंगे. यात्रा टालना आपके लिये हितकर रहेगा. पदोन्नति की चर्चा होगी.

कन्या- धन प्राप्ति के लिये प्रयास करना पड़ेगा. मानसिक श्रम अधिक होगा. यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी बांछनीय. यश प्राप्त होगा.

तुला- धार्मिक कार्यों में रूचि एवं लगन रहेगी. विलासिता की वस्तुओंका संचय होगा. पुराने मित्र से अचानक मुलाकात होने से प्रसन्नता होगी.

वृश्चिक- राजकीय कार्यों में खर्च होगा. व्यापार में लाभ की प्राप्ति होगी. मानसिक शांति बनी रहेगी. नवीन योजना बनेगी. शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है.

धनु- पारिवारिक सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सफ्ल होगा. व्यापार व्यवसाय अच्छा रहेगा. स्त्री जाति की सलाह से सुख और सफ्लता प्राप्त होने का योग है.

मकर- अनुकूल वातावरण में काम करने का अवसर प्राप्त होगा. भौतिक सुख एवं मनोरंजन होगा. लाभदायक समाचार मिलेगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

कुम्भ- आर्थिक एवं व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार होगा. पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी.

मीन- शुभ समाचार से खुशी होगी. मनोरंजन का लाभ मिलेगा. मानसिक प्रसन्नता में वृद्धि होगी. मित्रता लाभदायक उपयोगी और सुखद रहेगी.

SUDOKU 7341

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7340

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7